वाराणसी (भारत)
अगस्त ०७, २०००

सन्देश संख्या २६

हम भिन्न इकाई नहीं

समाज एवं धर्म मनुष्य के मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व (अहंकार) को ही स्वीकार एवं प्रोत्साहित करते हैं। यद्यपि शारीरिक रूप से हम सब अलग–अलग अस्तित्व हैं, तथापि मनोवैज्ञानिक रूप से हम भिन्न इकाई नहीं हैं। मानव–चेतना का एक ही तत्व हम सभी में विद्यमान है। ब्रह्मांड में मात्र एक केन्द्र–बिन्दु है और हम सभी उसके चतुर्दिक संकेन्द्रित वृत्त हैं। यही कारण है कि इसे अंगरेजी में 'यूनि' – 'वर्स' कहा जाता है अर्थात् 'एक' ('यूनि') 'छंद' ('वर्स') न कि 'मल्टि' 'वर्स' अर्थात् 'बहु' ('मल्टि') 'छंद' ('वर्स')। यह छंद उस एक महाकाव्य, एक अनुगूंजित रहस्य, एक लय, शून्य के एक नृत्य – शिव से उद्भूत है।

मनुष्य की विभेदकारी चित्तवृत्ति उसके अहम् केन्द्र के ब्रह्माण्ड के मूल–केन्द्र से अलग हट जाने के कारण है। अहं एक भ्रम है जो सांसारिक संदर्भों में तो उपयोगी किन्तु गहन आध्यात्मिक संदर्भों में पूर्णतया अनुपयोगी है। यह भ्रम विविध अवलम्बों एवं गोरखधंधों के द्वारा सम्पोषित होता रहता है। इस प्रकार मन की आत्मसंरक्षी–यंत्ररचना, जो कि एक मिथक है, संपोषित होती रहती है।

क्रियायोग में स्थिति के लिये विकल्प रहित उदासीनता अनिवार्य है। भूमि की जुताई जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही उसका कुछ अवधि के लिये परती रहना । जैसे परती रहने की अवधि में उसे फ़िर से प्रकृति से उर्वरा–शक्ति प्राप्त करने का अवसर मिलता है, उसी प्रकार, मन को शांत एवं विकल्प रहित अवस्था में रहने पर अपने आपको ऊर्जान्वित एवं पुनर्जीवित करने का अवसर मिलता है।

निरपेक्ष जागरूकता मन को इसकी प्रतिक्रियाओं से मुक्ति प्रदान करती है, जिसके फलस्वरूप अनायास ही आभ्यन्तरिक शान्ति प्राप्त होती है। यह एक असीम जागरूकता है। यह एक ऐसी गति है जो समस्त विचारों एवम् अनुभूतियों से परे है।

नमः शिवाय
सत्य सरलता प्रेम